पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष :1, संख्या :1; जुलाई-दिसंबर, 2020

बांग्ला लोकगीत

त्रिपुरा के लोकदेवता 'त्रिनाथ' के गीत

संकलन एवं अनुवाद - तृष्णा रॉय

मूल 1

ठाकुर त्रिनाथ साजाबो बनफुले गो सजनी
ठाकुर त्रिनाथ साजाबो वनफुले।
सजनी गो, अष्ट गाछेर अष्ट फूल माँ आनो गो तुलीया।
ठाकुर तृणाथेर आसने पुष्प देउ ना सजाया गो सजनी।
ठाकुर त्रिनाथ साजाबो बनफूले।
है सजनी गो छुआरे चंदन लोउगो कटोरा भूरिया ,
ठाकुर त्रिनाथेर आसने चंदन देउना गो टाईया गो सजनी ,
ठाकुर त्रिनाथ साजाबो वनफुले ।
सजनी गो गाजा लव जटार जटा ताते सादा देउ मिशाया।
ठाकुर त्रिनाथेर आसने कलकी देउना सजाया गो
सजनी ठाकुर नाथ साजाबो वन फुले।

अनुवाद

ठाकुर त्रिनाथ को हम वनफूल से सजाएंगे,
ठाकुर त्रिनाथ को वनफूल से सजाएंगे।
सजनी आठ लताओं से आठ फूल तोड़ कर लाओ,
ठाकुर नाथ के आसन को सजा दो सजनी,
ठाकुर नाथ को वनफूल से सजाएंगे ।
सजनी कटोरा भर चंदन लेकर आओ,
भगवान त्रिनाथ के आसन में चंदन ढक दो ,
सजनी, भगवान त्रिनाथ को हम वनफूल से सजाएंगे।
सजनी हाथ में गांजा लो एवं उसमें सिद्धि दो,
भगवान त्रिनाथ के आसन में कलकी दो सजनी,
भगवान त्रिनाथ को हम वनफूल से सजाएंगे।

मूल 2

तुम दया कर एसो आमार बाड़ीते
अ भोलानाथ तुमी दया कर एसो आमार बाड़ी|
भोलानाथ तुमी शशाने थाको मुखे बोलो होरी ,
अनपूरणा मां के आमार रेख कैलाशपुर
हे भोलानाथ तुम दया कर एसो आमार बारीते|
तुम दया करे एसो गो आमार बाड़ी।
भोलानाथ तुमी भांग खाओ धुतुराओ खाओ मुखे बोलो हरी,
परमार हस्ते त्रिशूल शोभे है शिरे जटाधारी

हे भोलानाथ तुमी दया करे एसो आमार बाड़ी।

अनुवाद

भगवान तुम हम पर दया करो और हमारे घर आकर पधारो ,
हे भोलानाथ तुम दया करके हमारे घर पधारो।
हे भोलानाथ तुम श्मशान में रहते हो लेकिन हरि नाम जप करते हो,
तुम मेरी अन्नपूर्णा मां को कैलाश में रखकर श्मशान आकर ध्यान करते हो।
तुम दया करके हमारे घर पधारो।
हे भगवान, तुम हमारे घर पधारो ।
भोलानाथ तुम भांग खाते हो धतूरा भी खाते हो,
लेकन हरि नाम जप करते हो।
तुम्हारे हाथ में त्रिशूल शोभा पाता है, और तुम्हारे माथे पर जटा
भोलानाथ तुम दया करके हमारे घर पधारो।

मूल 3

तीन पयसाय होय बाबार मेला
कलीते तीन-नाथेर मेला ।
एक पयसार सिद्धि एने तिन कलकि साजाए
साधु रे भाई कलीते तीन-नाथेर मेला।
एक पयसाय पान एने तीन खिली साजाए
साधु रे भाई कलीते तीन-नाथेर मेला ।
एक पयसाय तेल एने तीन बात्ती जालाएं
बात्ति जालए दिले निभेनारे ताँर एक आजब लीला,
साधु रे भाई कलीते तीन-नाथेर मेला ।

अनुवाद

तीन पैसे से बाबा भोलानाथ का मेला होता है।
कलियुग में तीननाथ मेला होता है।
एक पैसे की सिद्धि लाई जाती है, इससे तीन कलकी दी जाती है ।
साधु भाई कलियुग मे तीननाथ मेला लगा है।
एक पैसे से पान लाकर इससे तीन पत्ते सजाते हो,
साधु रे भाई कलियुग मे तीननाथ मेला लगा है।
एक पैसे से तेल लाकर तीन दिए जलाते हो,
जलाने के पश्चात् वह भी और बुझती नहीं।
यह आश्चर्य की बात है ।
साधु रे भाई कलियुग मे तीननाथ मेला हो रहा है।

मूल 4

दिन गेलअ त्रिनाथेर नाम लोईयो
साधू रे भाई लैयो नामटी परम जतने
साधु रे भाई दिन गेलो त्रिनाथेर नाम लोईया।
लैयो नामटी परम जतने |

अनुवाद

दिन ढलने से नाथ का नाम लेना मत भूलना
रे साधु भाई दिन जाने पर भी त्रिनाथ का नाम लेना।
इस नाम को जतन के साथ लेना साधु भाई

इस नाम को जतन के साथ लेना।

मूल 5

आज क आनंद हईतेछे ।

त्रिनाथ ठाकुरेर सेवा लाइगाछे ।

सेवा लाईगाछे ,लाइगाछे ।

अरे चीनी संदेश फूल बताशा ,खांचा भरा साजाईछे।

अरे साद पाबार बांछा कोईरा श्यामचांदे दाड़ाईछे ,

ओगो श्याम चांदे दाड़ाईछे ।

अनुवाद

आज मेरे मन में आनंद की अनुभूति हो रही है,

यहाँ त्रिनाथ भगवान की पूजा हो रही है।

पूजा हो रही है, पूजा हो रही है।

और शक्करकंद जैसी मठाई, फूल, बत्तासा, खाजा

देकर प्रसाद सजाया गया है ।

और प्रसाद पाने की आस में श्यामचंद रुके हुए हैं,

अरे श्यामचंद रुके हुए हैं।

मूल 6

एलो रे त्रिनाथ ठाकुर जोगोते ,

आजगब तामशा हईलो कलीते।

नीलाते हरी सर्बमय पूरा पागलेर आश्रय

चिल्लाईते शंभू चांद आपने उदय

आजगब तामशा हुईलो कलिते।

अनुवाद

त्रिनाथ भगवान इस जगत में पधारे हैं

और तभी कलि में अजीब तरह के तमाशे हो रहे हैं।

भगवान सारे पागलों के बीच नीले में लिपटे हैं।

इस जगत में शंभू चांद का उदय हुआ है

उसके बाद अजीब तमाशा कलियुग में होने लगा है।

मूल 7

तुमरा गाउ हे ओगो प्राण सखी

योगल रुपे आरती

सन्धा समई आरोगी सखी

धुप प्रदीप लईया

योगल पदे दाउ अरोति

बिनाया बिनाया

प्राण सखी योगल रुपे आरती

सन्धा समई आरोगी सखी

चोरा चन्दन लईया

योगल पदे चन्दन छिटैया छिटैया

प्राण सखी योगल रुपे आरती

सन्धा समई आरोगी सखी

फुलेर माला लईया

योगल गले दाउ गो माला

मन प्राण सपिया

प्राण सखी योगल रुपे आरती

एमन भाघ्य कबे हबे

ब्रिन्दबने याबो

ब्रिन्दबने नित्य लिला

नओंन हेरिया

प्राण सखी योगल रुपे आरती

अनुवाद

तुम लोग गाते रहो हे प्राण सखी!
इस युगल रूप की करते रहो आरती
धूप-दीप लेकर आरोग्य सखी
आओ संध्या के समय
युगल चरण में करो हे आरती
मन से करके विनय हे प्राण सखी!
युगल रूप की करो आरती
हे प्राण सखी! युगल रूप की करो आरती
चोरा चंदन लेकर आरोग्य सखी!
आओ संध्या के समय
छिड़क-छिड़क कर चंदन चढ़ाओ प्राण सखी!
युगल रूप की करो आरती
पुष्प की माला लेकर आरोग्य सखी
आओ संध्या के समय
युगल गले में पहनाओ माला
मन प्राण से करके प्रणय
प्राण सखी युगल रूप की करो आरती
ऐसी किस्मत कब होंगी
कि वृंदावन जा पाएंगे
वृंदावन की नृत्य-लीला
आंखों को सुहाय प्राण सखी!
युगल रूप की करो आरती।

संपर्क सूत्र:
शोधार्थी
हिंदी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय